साहित्योत्सव
Festival of Letters 2023
साहित्य अकादेमी
आज़ादी का अमृत महोत्सव
G20 भारत 2023 INDIA
Ministry of Culture
Government of India
11-16 मार्च 2023
नई दिल्ली
दैनिक समाचार बुलेटिन
मंगलवार, 14 मार्च 2023

शिक्षा और सृजनात्मकता

आज के कार्यक्रम

अखिल भारतीय कवि सम्मिलन :
एक पृथ्वी . एक परिवार . एक भविष्य
वाल्मीकि सभागार, पूर्वाह्न 10.30 बजे

परिचर्चा : नाट्य लेखन
व्यास सभागार, पूर्वाह्न 10.30 बजे

एल.जी.बी.टी.क्यू. लेखक सम्मिलन
व्यास सभागार, अपराह्न 2.30 बजे

आदिवासी लेखक सम्मिलन (जारी...)
तिरुवल्लुवर सभागार, पूर्वाह्न 10.00 बजे

नारी चेतना
तिरुवल्लुवर सभागार, अपराह्न 2.30 बजे

लेखक से भेंट : उषाकिरण खान, प्रख्यात मैथिली एवं हिंदी लेखिका के साथ
तिरुवल्लुवर सभागार, सायं 5.00 बजे

राष्ट्रीय संगोष्ठी : महाकाव्यों की स्मृतियाँ, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन तथा राष्ट्र निर्माण
अकादेमी सभागार, प्रथम तल, पूर्वाह्न 11.00 बजे

सांस्कृतिक कार्यक्रम : क़व्वाली, निज़ामी ब्रदर्स
मेघदूत मुक्ताकाशी सभागार-1, सायं 6.00 बजे

साहित्योत्सव 2023 के दौरान 13 मार्च 2023 को पूर्वाह्न 11.00 बजे साहित्य अकादेमी द्वारा तिरुवल्लुवर सभागार में 'शिक्षा और सृजनात्मकता' विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने अंगवस्त्रम् से मृणाल मिरी का स्वागत किया और साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी अतिथियों का अंगवस्त्रम् से स्वागत किया। अपने स्वागत वक्तव्य में उन्होंने कहा कि साधरणतया कहा जाता है कि शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान प्रदान करना है, जबकि सृजनात्मकता ईश्वर का वरदान होती है। आगे उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति में छात्रों और शिक्षकों के लिए शिक्षा और सृजनात्मकता में संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया गया है। शिक्षा में स्वतंत्रता से ही बच्चों में सृजनात्मकता और प्रतिभा का विकास होता है।

इस परिचर्चा की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक एवं पूर्व सांसद मृणाल मिरी ने की। उन्होंने कहा कि कुछ बच्चों में कौशल के साथ-साथ प्रतिभा भी होती है। रवींद्रनाथ टैगोर का उदाहरण देते हुए कहा कि वे प्रतिभाशाली लेखक थे, उनमें अपने गीतों और कविताओं में अच्छे शब्दों के चयन करने का कौशल था। उन्होंने शिक्षा द्वारा सृजनात्मकता को बढ़ावा दिया। उन्होंने कहा कि नवीन विचारों से वस्तुओं और रचना का जन्म लेना ही सृजनात्मकता है।

प्रख्यात लेखक एवं विद्वान अनीसुर रहमान ने कहा कि सृजनात्मकता और शिक्षा हमारी क्षमता और समझ को बढ़ाते हैं। सृजनात्मकता और शिक्षा एक-दूसरे के पूरक होते हैं। इसके बाद माता-पिता और गुरु से सीखते हैं। सृजनात्मकता हमें स्वतंत्रता देती है। सृजनात्मकता से हम विस्तृत रूप से विचार कर पाते हैं।

प्रख्यात हिंदी लेखक एवं विद्वान गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि यह विषय समाज और समाज के भविष्य दोनों से जुड़ा हुआ है। शब्द और अर्थ का रिश्ता वैसा ही है जैसे शिक्षा और सृजनात्मकता का है। औपचारिक शिक्षा कब और कैसे शुरू हुई, यह इतिहास की बात है। दुर्भाग्य से आज की शिक्षा पाश्चात्य ज्ञान को अर्जित करना भर रह

गई है, सृजनात्मकता उत्पन्न करना नहीं। शिक्षा का अर्थ ही है परिष्कार या बदलाव।

प्रख्यात ओड़िआ लेखक गौरहरि दास ने कहा कि मैंने शिक्षा गुरु से पाई और सृजनात्मकता प्रकृति से। सृजनात्मकता प्राकृतिक रूप में होती है जबकि शिक्षा हम दूसरों से सीखकर प्राप्त करते हैं और यह हमारे भविष्य के लिए आवश्यक है।

प्रख्यात हिंदी लेखक एवं संपादक शिवनारायण ने कहा कि शिक्षा केवल कई पुस्तकों से प्राप्त सूचना है जबकि सृजनात्मकता एक भाव, एक विचार का जन्म लेना है। उत्पन्न विचारों का व्यावहारिक रूप से सार्थक रूप देना ही सृजनात्मकता है। सृजनात्मकता नवीन विचारों, उपयोगी वस्तुओं का सृजन करना है। यह कौशल से भी संबंध रखती है ख़ासकर विशेषताओं के उन्मेष, सृजनात्मक क्रिया और सृजनात्मक परीक्षण के द्वारा हम सृजनात्मकता तक पहुँच पाते हैं और सृजनात्मकता का उन्मेष अपनी भाषा में ही होता है।

प्रख्यात लेखक एवं कुलपति टी.वी. कट्टीमनी ने कहा कि शिक्षा प्राकृतिक रूप से भी प्राप्त की जा सकती है। शिक्षा का काम खेल, नृत्य, संगीत आदि को भी बढ़ावा देना है। उन्होंने कई उदाहरण देते हुए कहा कि सृजनात्मकता के लिए किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं होती। शिक्षा में कला, संगीत, खेल, नृत्य आदि को शामिल करके ही सृजनात्मकता का विकास किया जा सकता है। मनुष्य के स्वभाव को देखकर ही उन्हें शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। अंत में उपस्थित श्रोताओं के पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के साथ सत्र का समापन हुआ।

शब्द-संसार और मेरी कला

साहित्योत्सव के तीसरे दिन 13 मार्च 2023 को अपराह्न 2.30 बजे 'शब्द-संसार और मेरी कला' विषय पर परिचर्चा आयोजित की गई। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्री निवासराव ने परिचर्चा की अध्यक्ष एवं प्रतिभागियों का अंगवस्त्रम् से उनका स्वागत किया। इस परिचर्चा की अध्यक्षता लब्धप्रतिष्ठ शास्त्रीय नृत्यांगना एवं विदुषी सोनल मान सिंह ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने शब्द के विषय में कहा कि शब्दों का भार बहुत अधिक है। शब्दों में बहुत ताक़त होती है। शब्द किसी को प्रसन्नता दे सकते हैं, तो किसी को घाव भी दे सकते हैं। हमारे चारों ओर बहुत-सी आवाज़ें हैं तथा इन आवाज़ों से हमारे मन-मस्तिष्क में नए विचार जन्म लेते हैं। अपनी बात को जारी रखते हुए उन्होंने कहा कि लेखक अपनी बात को कला के द्वारा प्रस्तुत करते हैं और हमारी कलाओं में बहुत संभवनाएँ हैं।

परिचर्चा में शामिल केतन मेहता ने कहा कि फ़िल्म मेकिंग में सभी कलाओं का समायोजन है। मैं स्वयं को एक कथावाचक के रूप में देखता हूँ। कहानियों के माध्यम से एक-दूसरे के विचारों का विनिमय होता है। रचनात्मक कृति की विशेषता को उजागर करते हुए उन्होंने कहा कि किसी भी रचनात्मक कृति के सफल बनने की प्रक्रिया में कई चरण होते हैं। किसी भी कृति के निर्माण से अनुभवों का आदान-प्रदान होता है।

अपनी फ़िल्मों पर बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि मेरी 40 प्रतिशत फ़िल्में साहित्यिक कृतियों से जुड़ी हुई हैं। 'मिर्च मसाला' फ़िल्म पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि यह फ़िल्म एक गुजराती कहानी पर आधारित थी। इस पर फ़िल्म बनाते हुए जो रूपांतरण हुआ वह मेरे लिए आश्चर्यजनक था। तम्बाकू फैक्ट्री क्या एक मसाला फैक्ट्री में बदल सकती है, यह मैंने फ़िल्म में प्रतिरोध रचने के लिए मूल कहानी के रूपांतरण में बदलाव किया। अब मुझे नहीं पता कि मूल कहानी का इसमें कोई हानि या अपमान हुआ, मगर एक सृजनात्मक कलाकार ऐसी छूट लेता है, क्योंकि उसे मूल बात और संदेश को व्यक्त करना महत्त्वपूर्ण लगता है।

राजा रवि वर्मा के जीवन पर रंजीत देसाई द्वारा लिखित उपन्यास पर 'रंग रसिया' फ़िल्म आधारित थी। इस फ़िल्म पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि इसमें भी हमने उस समय की परिस्थितियों और घटनाओं को बड़ी मेहनत से ढूँढा और इसे मूल कहानी के साथ जोड़ दिया। इससे फ़िल्म की कथा उस समय की कथा भी बन जाती है। जब एक कला दूसरी कला में रूपांतरित होती है तो इसमें काफी कुछ घटता और जुड़ जाता है। कलाएँ इस तरह साहचर्य निर्मित करती हैं।

सत्र में शामिल ए.पी. माहेश्वरी ने अपने विचार प्रकट करते हुए अपने प्रशासनिक जीवन

के अनुभवों द्वारा कुछ मार्मिक विडंबनात्मक घटनाओं का ज़िक्र किया, जिसमें निर्णय लेने के लिए मानसिक द्वंद्व की स्थितियाँ थीं। उन्होंने यथार्थ की कहानियों से बताया कि कई घटनाएँ आरोपित और साजिशन रची जाती हैं और निर्दोष को दंडित कर दिया जाता है। अपने 16-17 साल उ.प्र. पुलिस, बीएसएफ और सीआरपीएफ सेवा जीवन की ऐसी बातें बताईं जिनमें जनता और पुलिस द्वारा निभाई गई भूमिका को उन्होंने रेखांकित किया।

परिचर्चा के अन्य प्रतिभागी प्रख्यात चित्रकार जतिन दास ने भारत की विविधता के संदर्भ में कहा कि भारत एक 'यूनिक' देश है, जिसमें अनेक नदियाँ बह रही हैं, लेकिन वे आपस में जुड़ी हुई नहीं हैं और कुछ ऐसा ही हमारी भाषाओं और संस्कृति के साथ है। उन्होंने कई कविताएँ सुनाईं जिनमें इमेजेज का सुंदर प्रभाव था। शब्द, रंग-रूप कैसे एक दूसरे से गुँथे होते हैं, इसके बारे में विस्तार से बताया।

नेत्र विशेषज्ञ अनिल चौधरी ने बताया कि विचारों का आना और इसकी अभिव्यक्ति ही साहित्य है। सत् विचारों की वाणी ही शायद आत्मा की वाणी है। उन्होंने अपनी कुछ दार्शनिक कविताएँ भी प्रस्तुत कीं, जिनमें स्वर, शब्द, मौन, संगीत, रंग आपस में अतिव्यापन करते थे। शब्दों को लेकर उन्होंने कहा कि शब्दों को परिभाषित नहीं किया जा सकता।

नृत्यागंना नलिनी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आजतक जो भी उन्होंने संचित किया वह

नृत्य से ही किया है। सीखने के चरण के बारे में उन्होंनें कहा कि सीखने के चार चरण हैं जिनमें शामिल हैं - अक्षर ज्ञान (स्कूली शिक्षा), सानिध्य (गुरु की छत्र-छाया), अनुभव एवं संघर्ष (जो अंत तक चलता है)। शब्द और घुंघरू में संबंध स्थापित करते हुए उन्होंने कहा कि नृत्य में अर्थ पाँव के घुंघरू के माध्यम से ढूँढे जाते हैं। शब्दों के बारे में उन्होंने कहा कि शब्द बहुत मायने रखते हैं। लेखक ऐसे-ऐसे शब्द ढूँढ़ कर लाता है जिसे पढ़कर ही पाठक आनंदित हो जाता है। शब्दों में स्वर के महत्त्व को भी उन्होंने रेखांकित किया एवं कविता-पाठ भी किया।

परिचर्चा में शामिल अन्य प्रतिभागी सुजाता ने कहा कि शब्द ब्रह्म है। परिचर्चा में शामिल राघव चंद्रा ने कहा कि आज ऐतिहासिक दिन है क्योंकि भारत की दो फ़िल्मों को आस्कर पुरस्कार मिला है। उन्होंने कहा कि किसी कृति के सफल होने में मानवीय आदर्श, कहानी, उद्धरण का महत्त्व होता है। साहित्य मुझे सशक्त करता है। इससे मैं किसी दूसरे के परिवेश, ज़िंदगी और अनुभवों को अपने नज़रिए से देख पाता हूँ। साहित्य भौगोलिकता के बंधनों को तोड़ता है।

परिचर्चा में शामिल संदीप भुटोरिया ने कहा कि मैंने 50 देशों एवं भारत के गाँव-गाँव की यात्रा की है। मैंने अपने भ्रमण के दौरान भारत की विविधता को और निकट से देखा। साहित्य द्वारा ही विश्व का भारत में एवं भारत का विश्व में प्रवेश हुआ।

अन्य प्रतिभागी शोवना नारायण ने कहा कि स्वर शब्दों को आगे बढ़ाते हैं तथा एक शब्द के कई मायने होते हैं।

अनुवाद-कला : सांस्कृतिक संदर्भ में चुनौतियाँ

साहित्योत्सव के दौरान 13 मार्च 2023 को पूर्वाह्न 10.30 बजे 'अनुवाद कला : सांस्कृतिक संदर्भ में चुनौतियाँ' विषय पर परिचर्चा हुई। इस कार्यक्रम की राणा नायर ने अध्यक्षता करते हुए कार्यक्रम के आरंभ में कार्यक्रम की परिकल्पना पर प्रकाश डाला और विचार के बिंदु प्रस्तावित करते हुए कहा कि आधुनिकता एक अपूर्ण परियोजना है। अनुवाद शिक्षण और अध्ययन भी एक अपूर्ण परियोजना है। अनुवाद का इतिहास या इसकी कोई भारतीय थ्योरी है? इसके अध्ययन की बहुत बारीकी से पड़ताल करने की आवश्यकता है। हाशिये पर जीवन व्यतीत कर रहे लोगों के जीवन और उनकी संस्कृति तथा परंपरा और उनके मिथकों का अध्ययन करने की भारतीय परिवेश में बहुत आवश्यकता है। यह पड़ताल या विकास अनुवादक को 'भारतीय अनुवादक' बनने में मदद करेगा। भाषाओं की भी राजनीति होती रही है लेकिन अपनी सभी भारतीय भाषाओं के साथ हमें प्रेम करना होगा। अपनी बात को जारी रखते हुए उन्होंने कहा कि जैसे दिनचर्या चलती है वैसे ही अनुवाद चलता है। हम भारतीय लोग सदा ही अनुवाद की प्रक्रिया में रहते है। निरंतर अनुवाद करते रहते हैं। जब से भाषा आई है तब से ही अनुवाद आया है। अनुवादकों के हित की बात करते हुए राणा नायर ने कहा कि कोई अनुवादक के अधिकार की बात नहीं

करता। अनुवादक के लिए एसोसिएशन होनी चाहिए। 'रिपब्लिक ऑफ़ ट्रांसलेटर्स' बनाने के एक स्वप्न के साथ हमें शुरू करना चाहिए।

परिचर्चा में वर्षा दास ने कहा कि भाषांतर से ट्रांसक्रिएशन अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि एक भाषा से दूसरी भाषा में कृति को ले जाना ही संपूर्ण नहीं है, बल्कि अनुवाद करते हुए रचना की पुनर्रचना करना अनुवाद को सुंदर बनाता है। उन्होंने बताया कि वह अपने किशोर समय से ही अनुवाद कर रही हैं। अनुवाद की बारीक़ी पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि भाषा की अपनी संस्कृति को समझना एक अनुवादक के लिए ज़रूरी है तभी वह उसके मुहावरों, कहावतों और लोकोक्तियों का दूसरी भाषा में सही अनुवाद कर सकेगा। क्योंकि अनुवाद मात्र भाषिक रूपांतरण नहीं है बल्कि यह सांस्कृतिक रूपांतरण भी है। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा लंबे समय से आयोजित की जा रही अनुवाद कार्यशालाओं की सराहना करते हुए बताया कि उन कार्यशालाओं में रचनाकार, अनुवादक और भाषा विशेषज्ञ एक साथ बैठकर एक-एक शब्द पर विचार करते हुए अनुवाद करते हैं। यह प्रक्रिया अनुवाद को और प्रभावी बनाती है।

अनुवाद के समक्ष आने वाली चुनौतियों पर बात करते हुए परिचर्चा में शामिल गोपीनाथ ब्रह्म ने कहा कि भौगोलिक अंतर के कारण कई ऐसे फूल, फल हैं जो अन्य क्षेत्रों में पाए ही नहीं जाते। अनुवादक को उनके अनुवाद में बहुत कठिनाई होती है क्योंकि जब वह उस क्षेत्र में पाए ही नहीं जाते तो उनके लिए लक्षित भाषा में शब्द गढ़े ही नहीं गए। प्राचीन काल से, जब से बहुभाषी लोग साथ-साथ रहने लगे तब से ही अनुवाद होना प्रारंभ हो गया था। उन्होंने अपने अनुवादकीय जीवन की चुनौतियों और समस्याओं के बारे में भी अनुभवजन्य जानकारियाँ दीं।

परिचर्चा की अगली प्रतिभागी मिनी कृष्णन ने अनुवादकों को सलाह देते हुए कहा कि अनुवादकों को भाषा ज्ञान वाले व्यक्तियों से संपर्क में रहना चाहिए एवं पुस्तकों को पढ़ना चाहिए। अनुवाद पर वैश्वीकरण एवं बाज़ारवाद के प्रभाव को लेकर उन्होंने कहा कि वैश्वीकरण एवं बाज़ारवाद के कारण कई प्रकाशकों द्वारा पुराने लेखकों को नज़रअंदाज किया जा रहा है और ऐसी सामग्री का अधिक अनुवाद किया जा रहा है जो उत्तेजना फैलाती है।

आगे परिचर्चा में बनमाला विश्वनाथ ने कुकिंग और अनुवाद और अनुवाद करने की प्रक्रिया को समान मानते हुए अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने अनुवाद की लंबी परंपरा और इतिहास के परिप्रेक्ष्य में समकालीन स्त्री अनुवादकों का उल्लेख करते हुए कुकिंग और अनुवाद कार्य की समानता की उदाहरण सहित व्याख्या की। उन्होंने प्रतिभा नंदकुमार की एक कविता के माध्यम से उल्लेख किया और कहा कि यह एक अनुवाद कार्य में भी लागू होता है। उन्होंने कहा कि जैसे आप अपनी शारीरिक अवस्था, स्वाद, दशा, अपनी क्षमता और कौशल तथा परिवेश को ध्यान में रखकर 'कुक' करते हैं वैसे ही पाठक की रुचि को ध्यान में रखकर अनुवाद किया जाता है। खाना बनाने और अनुवाद के मध्य एक और समानता बताते हुए उन्होंने कहा कि जिस तरह खाना बनाने में खाद्य सामग्री एकत्रित की जाती है। कभी उन्हें तला जाता है, तो कभी उन्हें छौंका जाता है तो उन्हें उबाला जाता है, वैसे ही अनुवाद में क्या अनुवाद करना है, किस प्रक्रिया से करना आदि चरण होते हैं।

अनुवादक को दिए जाने वाले श्रेय को लेकर उन्होंने कहा कि आज अनुवादक का नाम पुस्तक के कवर पर नहीं लेकिन आंतरिक शीर्षक पृष्ठ पर जाने लगा है।

जे.एल. रेड्डी ने परिचर्चा को आगे बढ़ाते हुए कहा कि अनुवादक कुछ भी करे या कितनी भी मेहनत करे पाठक को पूरा संतोष नहीं दे पाता। अनुवाद को लेकर बहुत सी थ्योरीज़ आई हैं जबतक उन थ्योरीज़ का अभ्यास नहीं किया जाएगा तब तक पूर्ण सफलता नहीं मिलेगी। सांस्कृतिक विविधता के संदर्भ में अनुवाद में आने वाली चुनौतियों को लेकर उन्होंने कई उदाहरण प्रस्तुत किए। जिनमें उन्होंने बताया कि आंध्र समाज के कुछ रीति रिवाज ऐसे हैं, जिनकी हिंदी भाषी राज्यों में कल्पना नहीं की जा सकती। उन्होंने बताया कि दक्षिण भारत में मामा से भाँजी, भाई के बेटे से बहन की बेटी के विवाह की एक रीति है। जिसके लिए तेलुगु भाषा में 'मैनालिकलम' शब्द है। हिंदी समाज के लिए ऐसे किसी संबंध को सोचना मुश्किल है। अर्थात् हिंदी भाषा में ऐसे संबंध के लिए कोई शब्द भी नहीं है। ऐसे में अनुवादक को बड़ी ही सूझ-बूझ से काम लेना पड़ता है और सामग्री में कहीं यह सूचित करना पड़ता है कि ऐसा किसी निश्चित समाज में होता है। इसी संदर्भ में एक अन्य उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी पाठकों को यह जानना अटपटा लग सकता है कि तेलुगु भाषा में 'समकता' शब्द है। एक ख़ास रिवाज के लिए ऐसा कोई शब्द हिंदी भाषा में नहीं मिलता है। अपनी बात को समाप्त करते हुए उन्होंने कहा कि अनुवाद कार्य करते समय रचना को प्रभावशाली बनाने के लिए अनुवादक रचना में कुछ जोड़ता है तो कुछ घटाता भी है।

मोनालिसा जेना ने अनुवादक के समक्ष आने वाली चुनौतियों को लेकर कहा कि अनुवाद करना पाठक से संवाद करना है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि क्या अनुवाद करना है। इसके साथ उन्होंने यह भी कहा कि अनुवाद के लिए थ्योरी की आवश्यकता नहीं है। साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित मोनालिसा जेना की अनूदित ओड़िआ की लोक कथाओं का अनुवाद 'व्हेन रावेन्स स्पीक एंड हार्सेज़ फ्लाइ' एवं 'द बेस्ट स्टोरीज़ ऑफ नीलमणि महापात्र साहू' पुस्तक का लोकार्पण किया गया।

परिचर्चा के प्रतिभागी दामोदर खड़से ने कहा कि अभी जो नई शिक्षा नीति आई उसकी वजह से पाठ्यपुस्तकों को अनुवाद के माध्यम से अपनी-अपनी भाषा में पहुँचाने की ज़िम्मेदारी अनुवादकों की है। आगे उन्होंने कहा कि हर भाषा की अपनी विशेषता होती है। उन्होंने कई शब्दों के विभिन्न उदाहरण देकर अपनी बात पर प्रकाश डाला।

आमने-सामने

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2022 से पुरस्कृत लेखकों की प्रतिष्ठित साहित्यकारों/विद्वानों से बातचीत के अंतर्गत आज पहली बातचीत पुरस्कृत गुजराती लेखक गुलाममोहम्मद शेख के साथ प्रबोध पारिख ने की। गुलाममोहम्मद शेख ने लेखन की भाषा पर अपनी टिप्पणी देते हुए कहा कि मेरे लिए यह कहना मुश्किल है कि मैं अपने शब्द जानबूझ कर चुनता हूँ या वे मेरे अवचेतन मन से मेरी लेखनी में उतर आते हैं। गुजराती का शब्द संसार बेहद समृद्ध है और वह मेरे बेहद काम आया। मेरे संवादों ने भाषा में जो बदलाव किया वो एक बड़ा बदलाव था जो लोगों ने महसूस किया। जब मुझे पेंटिंग करते समय लगता है कि मैं कुछ उपयोगी नहीं बना पा रहा हूँ तो मैं उसे या तो अधूरा छोड़ देता हूँ या उसको पुनः बनाता हूँ। ऐसा ही कुछ मैं लिखते समय भी करता हूँ। भाषा और धर्म के साथ जुड़े हुए एक सवाल का उत्तर देते हुए कहा कि कई बार हम पूर्वजों की ग़लतियों के लिए वर्तमान पीढ़ियों को दोष देते हैं जोकि बहुत ग़लत है। मेरा मानना है कि भाषा बिना धर्म की होती है और वह आपको हमेशा एक सार्थक पहचान देती है। मैं अपनी भाषा पर गर्व करता हूँ इसीलिए मेरी भाषा गर्व की भाषा है। अपने परिचितों पर लिखते हुए मैं अपने भावों को संतुलित रखता हूँ।

हिंदी कवि बद्रीनारायण से गरिमा श्रीवास्तव ने बातचीत की। गरिमा श्रीवास्तव ने कवि बद्रीनारायण और सांस्कृतिक नृविज्ञानी के रूप में परिचय देते हुए बताया कि दोनों ही क्षेत्रों में वे लोक से गहरे जुड़े हैं और उनकी सारी प्रेरणाएँ लोक परंपरा से संचालित होती हैं। वे अपनी कविता का शिल्प कहाँ से और कैसे निर्मित करते हैं कि जवाब में बद्री नारायण ने कहा कि उनकी कविता का शिल्प स्मृतिकोष से बनता है और स्मृति से हम पार नहीं पा सकते। साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत पुस्तक *तुमड़ी के शब्द* में भी लोक, परंपरा, इतिहास तथा समकालीनता का सुंदर मिश्रण है; जिसके कारण कविता की भाषा और लय असाधारण रूप से समृद्ध हुई है। इस संग्रह की कविताएँ गहनता और दुर्लभ विश्वदृष्टि के साथ प्रेम, मानवता, अहिंसा तथा सार्वभौमिक बंधुत्व जैसे मानवीय मूल्यों का समर्थन करती हैं।

प्रख्यात मलयाळम् आलोचक एस. थॉमस मैथ्यू से प्रभा वर्मा ने बातचीत की। आलोचना करते समय वे शब्दों और जीवन के बीच संवाद कैसा है, वे इसे कैसे तय करते हैं, का उत्तर देते हुए एस. थॉमस मैथ्यू ने कहा कि मैं हमेशा एक आलोचक की दृष्टि से जीवन और संवाद को तोलता हूँ। इसीलिए मेरा नज़रिया एक सृजनात्मक लेखक से बिलकुल भिन्न होता है। मेरी आलोचना का एजेंडा पहले से तय नहीं होता, बल्कि मैं रचना में प्रयुक्त शब्दों की सत्यता को देखता हूँ। मैं यह भी देखता हूँ कि लेखक ने वर्तमान, सामाजिक दायरे को किस तीव्रता के साथ प्रस्तुत किया है और उसमें किन सुधारों की आवश्यकता है।

पुरस्कृत ओड़िआ लेखिका गायत्रीबाला पंडा से राजेंद्र प्रसाद मिश्र और पुरस्कृत तमिळ लेखक एम. राजेंद्रन से ए. वेन्निला ने बहुत सार्थक संवाद किया।

आदिवासी लेखक सम्मिलन

साहित्योत्सव 2023 के दौरान 13 मार्च, 2023 को अपराह्न 2.30 बजे साहित्य अकादेमी परिसर के तिरुवल्लुवर सभागार में आदिवासी लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात आदि लेखक एवं विद्वान कलिंग बोरांग ने आदि भाषा के लिए विशेष रूप से कार्य किया है। आदिवासी भाषाओं के विकास एवं उन्नयन के लिए साहित्य अकादेमी के प्रयास के लिए उन्होंने विशेष रूप से अकादेमी का आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि अगर आदिवासी स्वयं अपनी भाषा के विकास के लिए अपनी-अपनी भाषा में अपनी संस्कृति, आचार-विचार के बारे में लिखें तभी अपनी संस्कृति और भाषा को बचाया जा सकता है। दूसरी भाषा के विद्वानों द्वारा एक-दो महीने आदिवासियों के बीच रहकर उनके द्वारा किए गए कार्य से आदिवासी भाषा एवं संस्कृति दूसरों के समक्ष पूरी तरह से उभरकर नहीं आ पाती। क्योंकि वे आदिवासी भाषा उनकी संस्कृति की पूरी जानकारी नहीं रखते हैं। आदिवासी लेखक सबसे सुंदर भाषा और शब्द का चयन करके अपनी रचना का सृजन करते हैं। हमारी भाषा, कला और संस्कृति जीवित रहे इसके लिए आदिवासी लेखकों को स्वयं लिखना होगा। उन्हें अपने अस्तित्व को बचाए रखने और अपनी पहचान को बनाए रखने के लिए स्वयं कोशिश करनी होगी, तभी आदिवासी भाषाओं को बचाया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य अकादेमी द्वारा कई आदिवासी भाषाओं को भाषा सम्मान से सम्मानित किया गया है, इसके लिए हम साहित्य अकादेमी के अत्यंत आभारी हैं। अपने वक्तव्य के अंत में अपनी एक आदि कविता 'काश में आपसे खूब लड़ता' कविता का पाठ करके उन्होंने इसका हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किया।

इसी कार्यक्रम के अंतर्गत अपराह्न 3.00 बजे कविता-पाठ सत्र का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता प्रख्यात कॅकबॅरोक लेखक एवं विद्वान तथा साहित्य अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य बिकास राय देबबर्मा ने की। आरंभ में साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य महादेव टोप्पो ने बिकास राय देबबर्मा का स्वागत अंगवस्त्रम् प्रदान करके किया। उन्होंने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि हमारे अलग-अलग भाषा है जिसके कारण हम एक-दूसरे की भाषा को समझ नहीं पाते हैं, इसलिए हमें हिंदी या अंग्रेज़ी भाषा का सहारा लेना पड़ता है। अनुवाद के जरिये ही हम इसे विभिन्न भाषाओं के श्रोताओं और पाठकों तक पहुँचा सकते हैं। अंत में, उन्होंने आदिवासी भाषाओं के विकास एवं संरक्षण के लिए विशेष रूप से प्रयास करने के लिए साहित्य अकादेमी का आभार व्यक्त किया और अपनी एक कविता 'पोस्टमॉर्टम' का पाठ अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में कोंचोक ग्यात्सो (भोटी), बुधु सिंह (भूमिज), कन्हैया उइके (गोंडी), दास राम बारदा (हो), दिलबङ शेनॉङ् (लमकाङ), गुमान सिंह सुब्बा (लिम्बू), नॅर्मदा दलै (मिसिंग), अनिसा सलिल तड़वी (तड़वी), चिङ्या चावुङ (ताङखुल) ने अपनी-अपनी भाषाओं में कविताएँ प्रस्तुत कीं और हिंदी/अंग्रेज़ी में उनका अनुवाद भी प्रस्तुत किया।

भाषा सम्मान अर्पण समारोह

साहित्य अकादेमी के भाषा सम्मान अर्पण समारोह का आयोजन सायं 5.00 बजे, वाल्मीकि सभागार, साहित्य अकादेमी परिसर में किया गया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने सम्मान प्रदान किए। भाषा सम्मान से विभूषित दयानंद भार्गव, सत्येंद्र नारायण गोस्वामी, मोहम्मद आज़म, उदयनाथ झा, अशोक द्विवेदी तथा होरसिङ खोलर कार्यक्रम में उपस्थित थे, जबकि ए. दक्षिणामूर्ति एवं अनिल कुमार ओझा उपस्थित नहीं हो सके। माधव कौशिक ने पुरस्कृत विद्वानों को बधाई दी एवं साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने समापन वक्तव्य दिया। कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत किया।

वैचारिकता और साहित्य पर परिचर्चा

12 मार्च को वाल्मीकि सभागार में 'वैचारिकता और साहित्य' विषयक परिचर्चा का आयोजन बहुभाषी लेखक एवं सुपरिचित कैरियर डिप्लोमेट श्री अमरेंद्र खटुआ की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। आरंभ में स्वागत भाषण करते हुए अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि साहित्य अकादेमी के इतिहास में पहली बार इस तरह के विषय पर विमर्श का आयोजन किया गया है। श्री खटुआ ने कहा कि डिप्लोमैट के द्वारा साहित्यिक रचनाओं का उपयोग शांति के उपकरण के तौर पर किया जा सकता है। राजदूत सुरेश गोयल ने कहा कि डिप्लोमैसी और कुछ नहीं; बल्कि लोगों को समझने के बारे में है और साहित्य इसमें सहायक है।

श्री अभय के. ने एक कवि के रूप में कविता के साथ वैचारिकता के संबंधों पर अपनी बात रखी। श्री अरुण साहू ने कहा कि वैचारिकता यह सिखाती है कि दूसरों से कैसे और क्या बातचीत की जाए। राजदूत अंजु रंजन ने बड़ा कि एक डिप्लोमेट के रूप में उन्हें प्रायः अपने परिवार में दूर रहना पड़ता है, ऐसे में साहित्य उन्हें सुकून देता है। राजदूत विदिशा मैत्र ने कहा कि एक डिप्लोमेट के रूप में साहित्य नए लोगों और संस्कृति को समझने में सहायक होता है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम : ब्रज की होली

कार्यक्रमों की सूची

दिनांक	समय	कार्यक्रम	स्थान
15 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.30 बजे	परिचर्चा : मीडिया, न्यू मीडिया और साहित्य	वाल्मीकि सभागार
15 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	पूर्वोत्तरी (उत्तर-पूर्वी एवं पश्चिमी लेखक सम्मिलन)	वाल्मीकि सभागार
15 मार्च 2023	सायं 5.00 बजे	कथासंधि : अब्दुस समद, प्रख्यात उर्दू कथाकार के साथ	वाल्मीकि सभागार
15 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.00 बजे	एल.जी.बी.टी.क्यू. लेखक सम्मिलन (जारी...)	व्यास सभागार
15 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	परिचर्चा : डिजिटल युग में प्रकाशन	व्यास सभागार
15 मार्च 2023	पूर्वाह्न 11.00 बजे	परिचर्चा : सिनेमा और साहित्य	तिरुवल्लुवर सभागार
15 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	परिचर्चा : भारत में आदिवासी समुदायों के महाकाव्य	तिरुवल्लुवर सभागार
15 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.00 बजे	राष्ट्रीय संगोष्ठी : महाकाव्यों की स्मृतियाँ, भारतीय स्वतंत्राता आंदोलन तथा राष्ट्र निर्माण (जारी...)	साहित्य अकादेमी सभागार प्रथम तल
15 मार्च 2023	सायं 5.00 बजे	इंडो-कज़ाक लेखक सम्मिलन	साहित्य अकादेमी सभाकक्ष, तृतीय तल
15 मार्च 2023	सायं 6.00 बजे	सांस्कृतिक कार्यक्रम : साहित्य एवं अभिनय : पाठ से प्रस्तुति, जयंत कस्तुआर द्वारा	तिरुवल्लुवर सभागार
16 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.00 बजे	आओ कहानी बुनें (बच्चों के लिए कार्यक्रम)	मेघदूत मुक्ताकाशी सभागार-1
16 मार्च 2023	पूर्वाह्न 11.00 बजे	परिचर्चा : विदेशों में भारतीय साहित्य	वाल्मीकि सभागार
16 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	परिचर्चा : साहित्य और महिला सशक्तीकरण	वाल्मीकि सभागार
16 मार्च 2023	पूर्वाह्न 11.00 बजे	परिचर्चा : मातृभाषा का महत्त्व	व्यास सभागार
16 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	परिचर्चा : संस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति	व्यास सभागार
16 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.30 बजे	पूर्वोत्तरी (उत्तर-पूर्वी एवं पूर्वी लेखक सम्मिलन)	तिरुवल्लुवर सभागार
16 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	व्यक्ति एवं कृति : कैलाश सत्यार्थी, प्रख्यात समाज सुधारक एवं नोबेल पुरस्कार विजेता के साथ	तिरुवल्लुवर सभागार
16 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.00 बजे	राष्ट्रीय संगोष्ठी : महाकाव्यों की स्मृतियाँ, भारतीय स्वतंत्राता आंदोलन तथा राष्ट्र निर्माण (जारी...)	साहित्य अकादेमी सभागार, प्रथम तल

**कार्यक्रमों में परिवर्तन संभव है।*

मीडिया सहयोगी

National
आकाशवाणी
FM BOLE TOH 91.1 FM Radio City A JAGRAN INITIATIVE

अन्य जानकारी के लिए देखें
https://sahitya-akademi.gov.in

पुस्तक प्रदर्शनी
पूर्वाह्न 10.00 बजे से सायं 7.00 बजे

Buy Books Online
Link:
http://sahitya-akademi.org.in/

साहित्य अकादेमी
रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001
दूरभाष : 91-11-23386626/27/28
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

Sahitya Akademi | Azadi Ka Amrit Mahotsav | G20 | Ministry of Culture, Government of India

साहित्योत्सव
Festival of Letters 2023

11-16 March, 2023
New Delhi

Daily News Bulletin TUESDAY, 14 March 2023

Presentation of Bhasha Samman

Bhasha Samman, instituted by Sahitya Akademi in 1966, is given to writer, scholar, editor, collector, performer or translator who has made considerable contribution to the propagation, modernization or enrichment of the language concerned.

During the Festival of Letters, the Bhasha Samman Presentation Ceremony began at 5.00 p.m., at Valmiki Sabhagar, on 13 March 2023. Dr K. Sreenivasarao, Secretary, Sahitya Akademi, welcomed the Bhasha Samman Awardees, literary dignitaries and the literature lovers.

Bhasha Samman 2022 were presented to Sri Dayanand Bhargava, for *Classical & Medieval Literature 2019-Northern Region,* Sri Mohammed Azam, for *Classical & Medieval Literature 2019-Western Region,* Sri Satyendra Narayan Goswami, for *Classical & Medieval Literature 2019-Eastern Region,* Sri Uday Nath Jha, for *Classical & Medieval Literature 2019-Eastern Region* and Horsing Kholar (*Tiwa*). Sri Ashok Dwivedi and Anil Kumar Ojha (Bhojpuri) were awarded Bhasha Samman jointly. Dr. A. Dakshinamurthy, and Sri Anil Kumar Ojha, could not attend the presentation function.

Sri Madhav Kaushik, President, Sahitya Akademi, in his address, urged all the language lovers to take necessary steps for the protection of their mother tongues. In her concluding remarks, Prof. Kumud Sharma, Vice-President, Sahitya Akademi, appreciated the committed literary contribution of all the Bhasha Samman Awardees for the upliftment of Indian society and culture.

A. Dakshinamurthy has penned seven books, 32 translations from Tamil to English and two edited volumes of classical literature, besides several research papers, etc. Some of his publications are *Tamilar Nakarikamum Panpatum, Canka Ilakkiyam – Paripatal, Akananuru – The Akam Four Hundred Manimitai Pavalam (3 volumes), Kuruntokai – An Anthology of Classical Tamil, Perumail Tirumozhi, Paratitacan's The Darkened Home, Kamban- A New Perspective.* He is the recipient of Thamizh Nayakar Viruthu, Tolkappiyar Award, Na. Mu. Venkatasamy Nattar Award, Kalaignar Porkili Award, Thiru. V. Kalyanasundaranar Award, Nalli-Thisai Ettum Translation Award, Vallal Pandithithurai Thevar Award, Bharathidasan Award, etc.

Dayanand Bhargava has 31 publications to his credit, besides two hundred research papers chief among which are *Richa Rahasya, Sankhyakarika : Yuktideepika-Bhashya, Vyomavad,*

Today's Programmes

All India Poets' Meet : One Earth• One Family• One Future•, Valmiki Sabhagar, 10.30 a.m.

Panel Discussion on Playwriting, Vyas Sabhagar, 10.30 a.m.

LGBTQ Writers' Meet, Vyas Sabhagar, 2.30 p.m.

Tribal Writers' Meet (Contd...), Tiruvalluvar Sabhagar, 10.00 a.m.

Nari Chetna, Tiruvalluvar Sabhagar, 2.30 p.m.

Meet the Author with Usha Kiran Khan, Eminent Maithili & Hindi Writer, Tiruvalluvar Sabhagar, 5.00 p.m.

National Seminar on Memories of Epics, Indian Independence Movement & Nation Building, Sahitya Akademi Auditorium, 1st Floor, 11.00 a.m.

Cultural Event : Qawwali by Nizami Brothers, Meghdoot Open Air Theatre - 1, 6.00 p.m.

Vedaviganavakyamala, Bhriguvansha, Srimadbhagvatgeeta: Vipula Bhashya, Jain Parampara, Who Am I, Philosophy of Non-Violence, Jain Ethics and Studies in Jaina Agamas. He is the recipient of Acharya Hastimal Prize, Preksha Prize and the Highest honour for scholarship of Sanskrit, Certificate of Merit for Sanskrit Scholarship by President of India.

Mohammad Azam has a number of publications to his credit. He has scholarly been writing on religion in general and on Sufism and literature in Dakhani language in particular. Few of his significant publications include *Sufiwad aani Tulanatmak Dharmashtra, Sufi Tattwadnyan: Swarup aani Chintan* and *Adamji Padamji.* His writings on religions, Sufism, philosophy have highly been acclaimed. He presided over the 10th All India Muslim Marathi Sahitya Sammelan held in 2013 at Jalgaon, Maharashtra. He is the recipient of number of prestigious awards, some of which are Padma Bhushan Balasaheb Bharde 'Shabdagandha' Vaicharik Puraskar, Shreshthata Paritoshik, Padma Shri Dr Vitthalrao Vikhe Patil Utkrushta Sahitya Puraskar, Shahir Amar Sheikh Puraskar, Maharashtra State Government Award, Na. Go. Nandapurkar Sahitya Gaurav Puraskar, etc.

Ashok Dwivedi has penned more than 13 books and edited some magazines for the promotion of the Bhojpuri language. Some of his publications are *Ghananand Aur Unki Kavita, Ramji Ke Sugna, Gaon Ke Bheetar Gaon, Phootal Kirin Hazar, Ramjiyavandas 'Bhawla, Bhojpuri Rachana Aa Alochana.* He is the recipient of Sahitya Shree, Lokpurush Samman, Lok Kavi Samman, Setu Samman and Bhasha Patrakarita Samman is felicitated by many Bhojpuri organizations.

Anil Kumar Ojha has penned seven books and edited some magazines for the promotion of the Bhojpuri language. Some of his important works are *Maati Ka Diya, Veer Sipahi Mangal Pandey, Guru Dakshina, Kahat Kabir, Acharya Jeevak.* He is the recipient of Ram Nagina Samman, Abhayanand Samman, Prof. Kalyanmal Lodha Satat Sahitya Sadhna Samman, Pati Akshar Samman and Dr. Rameshwar Singh Kashyap Samman. Many a Bhojpuri organisation have felicitated him.

Satyendra Narayan Goswami has written, translated many books, made three dictionaries and edited a Grammar book in Assamese. Some of his publications are *Assamiya Sahityar Katha, Nibandha Guccha, Ram Saraswati Ashwakarna Badh, Sachitya Axamiya Abhidhan, The Festivals of North East India, Lind Johnson, Pali Dharmapad* and *Bharatiya Shreshtha Kahaniya.* He is the recipient of Kalicharan Brahma Award, Sahitya Mahiyan, Indira Gandhi National Fellowship, UGC Senior Research Fellowship and Post Graduate Merit Scholarship of UGC, Gauhati University.

Udaya Nath Jha has 77 publications to his credit. He has been industriously and scholarly writing in Maithili, Sanskrit, Hindi, English, Bengali and Odia. Some of his publications are *Smrititattvamrit, Sarisab Vaibhav, Sanskrit Kavyashastra ka Itihaas, Saat Sitare, Mahishi ke Mandan, Prabandha Manjusha, Shaktivicharah, Gonu-Vinod, A Brief Survey of Sanskrit Scholar's in Maithila* and *Taankar Gharare.* He is the recipient of Yuva Sahityakar Samman, Sanskritsevi Samman and Samman from All India Oriental Conference and Rashtriya Sanskrit Sansthan.

Horsing Kholar has published eight books and also helped in compiling dictionaries like 'Lingual Dictionary of Bodo, Deori, Dimasa, Garo, Karbi, Missing, Rabha, Tiwa, Assmese, English and Hindi'. Some of his works include *Plangsi, Sigarune Sunjuli, Adla re Thendone Sadra, Kharai Muthungaraw* and *Panat Shala.* He is honoured by Tiwa Autonomous Council in 2013.

Face to Face

Sahitya Akademi organized a 'Face to Face' programme at Valmiki Sabhagar, at 10.30 a.m., on March 13, 2023 featuring select Award winners in conversation with eminent writers.

Sri Prabodh Parikh, noted poet, writer and visual artist, conversed with Sri Gulammohammed Sheikh, award-winner in Gujarati for *Gher Jatan* (collection of autobiographical essays). On the question of choosing a language in which he would write, he said, he often thought that if Lorca can write in his mother tongue, why can't he write in his mother tongue. It was a challenge for him. He first learnt how to enter the belly of a language which would provide him the words for his creative expressions. The writing was not so easy. He would write a piece of poetry, re-write it, present it before his friends who will give critical views then he would go back to his room, re-write it until it comes out as the best! This continued all through his writings which culminated in bringing out his books.

In the second segment of the programme, Smt. Garima Srivastava, noted Hindi writer and critic, conversed with Sri Badri Narayan, award-winning writer in Hindi for his poetry collection, *Tumadi Ke Shabd*. Answering to a series of questions put forth by Smt. Srivastava, Sri Badri Narayan gave an account of his writings from the beginning till date. He said, a poet writes out of whatever happening around him which, later, he invents, re-invents and continues with the same till it comes out fine. The very aim of poetry is to awaken our inner self, to make it sensitive and to free us from being self-centered, he concluded.

Sri Prabha Varma, eminent Malayalam writer, conversed with Sri M. Thomas Mathew, award-winner in Malayalam, for his critical treatise - *Ashaante Seethayanam*, recalling his earlier days,

said, that he was not born and brought up in a family which had any social background to prompt him to become a writer. However, his father was a reasonably good reader and he had great respect for writers. They had a venerable Guru who used to narrate the stories of world classics. He opened their eyes to look beyond text books and equipped them to enjoy reading. *Asante Seethayanam* was possible from the feeling that there are still new questions to be asked about this work.

Sri Rajendra Prasad Mishra, noted translator, conversed with Smt. Gayatribala Panda, awardee in Odia for her poetry book, *Dayanadi*. Smt. Panda began with recitation of a small poem in Odia from her awarded work. Talking about her awarded book, she said it is a series of poems based on historical Dayanadi through which, she wished to convey that for the survival of the mankind, peace and love is absolutely necessary rather than prolonged wars and battles. The battle of Kalinga was fought on the banks of the river Dayanadi and the river is continuously flowing since ancient times to awaken humanity among people, she concluded.

Ms. A. Vennila, noted Tamil writer, conversed with Sri M. Rajendran, the awardee in Tamil for his novel - *Kala Pani*. Sri Rajendran recalled his college days, when he was generally among back benchers. In the early days he was hesitant to show his writings but gradually he overcame from this, presented his writings in his friend circle who prompted and inspired him to continue with his writings. Through creative writings, one can express himself/herself in a more disciplined manner. He further said that sometimes, he found that some of his readers are better informed than him so one should write very carefully when writing a historical novel.

Panel Discussion

Art of Translation: Challenges in Cultural Context

A Panel Discussion on "**Art of Translation: Challenges in Cultural Context**" was held at 10.30 p.m., at Vyas Sabhagar. Prof. Rana Nayar, eminent English critic, and translator chaired the panel discussion.

He said that it has long been felt that translators are a marginalised tribe, a disorganised sector. He said that an Association of Translators will soon come into existence. Prof. Varsha Das, eminent translator and scholar, said for Bhashantar, i.e., transferring into another language, a translator has to have knowledge of culture of both the sides for bridging the gap. Sri Gopinath Brahma, eminent Bodo translator and scholar expressed that translation is not a novel concept, it emerged when multilingual people came across each other, translation of emotion begun. He also read translation of one of his poems. Sri Damodar Khadse, eminent translator and scholar, said translation has yet not reached the stage of a certain standardization rather it is a personal overview. He pointed out that Poetry and Humour are the two most difficult genres for translation, as the two require awareness and knowledge of both sides of languages for translation. Ms. Mini Krishnan, eminent scholar and editor, said that the eco-system of translation in the country is fragile. The work of translation is a bridge-builder. She cited examples from the *Bible*, the most translated book, for illustration purposes, that how it was modified to adapt to the local needs, for the sake fulfilling its purpose of passing the message. Prof. Vanmala Viswnatha, eminent poet and translator, exemplified the challenges of nuances of translation faced by a translator with the help of brilliant analogy of cooking. Dr J. L. Reddy shared long-list of instances from rituals and traditions from Telugu and Hindi culture to exemplify the challenges faced by a Telugu-Hindi translator. Ms. Monalisa Jena shared that theory is not quintessential for a translator but maybe of assistance in the journey of translation.

World of Letters and My Art

A Panel Discussion on **"World of Letters and My Art"** was held at 2.30 p.m., at Vyas Sabhagar. Smt. Sonal Mansingh, distinguished classical dancer and scholar, chaired the panel discussion.

Dr K. Sreenivasarao, Secretary, Sahitya Akademi, in his welcome address said that literature itself is an art and the relationship between each art form and literature can be well-established. Sonal Mansingh, while chairing the programme, began with reciting the Sanskrit shloka "Om Saraswati Namah" and said that 'word' is 'Brahma', the cosmos which converts intangible into tangible and then elaborated the relationship between words and art. She further said that word has a lot of power; it can give wounds and can also heel. Word, if stretched, can take one to infinity. In Art there are many possibilities that can uplift word and can bring out a better understanding of the word. Anil Chaudhary, noted Pakhawaj player of Darbhanga Gharana and top-grade artist of All India Radio and Doordarshan, said that expression of thoughts itself is literature. The voice of good thoughts is the voice of the soul. He also recited some of his poems. A.P. Maheshwari, a retired IPS Officer, shared some true stories and incidents that occurred while he was in service. He said that the agony, pain and suffering of the people impelled him to become a writer. Jatin Das, eminent painter, poet, sculptor, muralist, print-maker, teacher and cultural expert, said that India is a unique country where all the rivers are flowing but they are not linked. It is a great country of experience of many learned people with various art forms but all in seclusion. He further said that we have created cubical and separated music, literature and all other art forms. Ketan Mehta, distinguished film director and producer, said that he has an inherited love for the world of letters from his father. As a film-maker, he has learnt many art-forms and realized that the beginning of any creative thing is a sense of wonder which pervades all art forms. When one has to express something the words come in, music come in and much more mediums of expression. In cinema the base is a literary work which comes out as a cinematic adventure. Nalini, one of the famous Kathak dancer sister-duo-Nalini-Kamlini, said that there are many stages of learning in life. The first stage is knowledge of words which is acquired in school. Word is very important in life, they can create as well as destruct. Raghav Chandra, former Civil servant, said that literature has a very important role in our lives; no art can be successful without it. He further said that for making a film you require script, for music you need words. Shovana Narayan, an acclaimed Kathak performer and choreographer, said that 'Om' is born out of the Shoonya, words developed later and the human life blossomed thereafter. She further said that in art even intangible is communicative. Sujata Prasad, an author, art columnist, curator and heritage conservationist, said that she learnt various art forms and came to know very closely Kavi Rabindranath Tagore as a painter. His paintings were very unusual and were a bundle of expressions, his literature could evoke emotions. Sundeep Bhutoria, a social and cultural activist, said that he has travelled more than 50 countries and met a number of writers and artists and learnt that art cannot be divided.

Education and Creativity

A Panel Discussion on **"Education and Creativity"** was held at 11.00 p.m., at Tiruvalluvar Sabhagar. The session was chaired by distinguished litterateur and philosopher Sri Mrinal Miri. The eminent panellists who shared their views on education and creativity were Prof. Anisur Rehman, Sri Girishwar Mishra, Sri Gourahari Das, Sri Shivnarayan and Prof. T.V. Kattimani. Prof. Shantishree D. Pandit was unable to make it to the discussion.

Sri Mrinal Miri from the chair said that creativity varies from person to person. One can be educated but he/she cannot be considered creative if he/she would not gain knowledge from the world around them. They will hence be limited to only certain kinds of textbooks that are prescribed in their syllabus. One has to build the ability to know their own creativity to excel in their respective life. Prof. Anisur Rehman expressed his view by saying that he finds this topic a bit difficult as both education and creativity are different. As education is given and creativity is something that evolves inside a person. The relationship between education and creativity is that creativity strengthens and enriches one to use his/her education in the right way. I believe if a man truly understands the meaning of mankind is in a true sense is what called education.

Sri Girishwar Mishra stated that the relationship between education and creativity is very weak in India. As in India, we have slowly become the consumers of the West. Even if we have creative minds, this so-called westernisation has limited our creativity. Sri Gourahari Das said that if I have to answer this question about education and creativity in a single line, then my answer would be 'i get education from my teachers and creativity is my nature'. I am an author and I am well aware of the fact that creativity is superior to knowledge. If you are not creative enough then you can never create great works no matter how educated you might be. Sri Shivnarayan said that I still vividly remember an account from a 12-year-old incident when I visited a school, I saw a teacher scolding a child as the child was constantly looking out of the window to see a bird sitting on a branch of a tree. Then the principal called that teacher and asked the reason why he scolded the child. The teacher explained the reason and that day what the principal told the teacher I can never forget that. The principal replied to the teacher that he was killing the creativity of that child by scolding him for being absent-minded in the class and looking out of the window. That child might be thinking something poetic or may that be anything you should not have stopped him from doing. That day I realised the importance of creativity. Prof. T.V. Kattimani said that we need to understand that creativity enhances our knowledge and gives us the freedom to look beyond and overcome our limitations and ignorance. It helps us create a world of our own imagination and also to turn that into reality.

Tribal Writers' Meet

A Tribal Writers' Meet was held at 2.30 p.m., at Tiruvalluvar Sabhagar. Sri Kaling Borang, eminent Adi writer, scholar, editor and social activist, was the chief guest at the Inaugural Session of the Meet. In his inaugural speech Sri Borang said that he deeply admires Sahitya Akademi's efforts for promoting the tribal languages. He shared that he feels that it is better that a tribal-writer himself writes about his/her culture and language instead of an outsider. This also makes a tribal-writer a very valuable asset to the tribe. He also shared that Sahitya Akademi is doing a commendable job of encouraging the tribal writers of the languages which are unrecognised by the Constitution, by honouring them with Bhasha Samman. He concluded his speech with his poem in Adi language and later also presented its translation namely, 'kaash main aapse khoob ladta'.

The first session of the Meet, devoted to Poetry Recitation, was chaired by Sri Bikash Rai Debbarma, noted dramatist, actor, music director, editor, scholar and translator. Dr Konchok Gyatso (Bhoti), Sri Budhu Singh (Bhumij), Sri Kanhaiya Uikey (Gondi), Sri Das Ram Barda (HO), Sri Dibung Shenong (Lamkang), Sri Guman Singh Subba (Limboo), Ms Normada Doley (Mising), Ms Anisa Salil Tadvi (Tadvi) and Sri Chingya Chawung (Tongkhul) recited their poems.

Cultural Programme: Braj Ki Holi

As part of the Festival of Letters, the Akademi organized a cultural programme—Braj Ki Holi, directed by Dinesh Sharma, Shyama Braj Lok Kala Manch, Mathura, at Meghdoot Open Theatre-1.

Shyama Braj Folk Art Forum is a cultural organization. Pandit Dinesh Sharma is the Director of the organization and the Music Director is Braj Rasik Pandit Harishankar Shukla. The objective of this organization is to take the culture of Braj to every corner of the world. The world famous Mayur Nritya of Braj and Barsane's Lathmar Holi, Holi of flowers and Radha Rani's world famous Charkula dance of 108 lamps are included. Shyama Braj Lok Kala

Manch has promoted the art of Braj not only in India but also abroad. The Shyama Braj Lok Kala Manch is privileged to get several opportunities to take the art of Braj beyond its territories in cultural programs organized by the Government of India at various places like - Taj Mahotsav, India Festival, Surajkund Mela, Safford Festival, Firozabad Festival, G20 Conference, and many others. Shyama Braj Lok Kala Manch has also performed in other countries like USA, London, Mauritius, Dubai, New Zealand, etc.

Schedule of Events

Date	Time	Event	Venue
15 March 2023	10.30 a.m.	Panel Discussion on Media, New Media and Literature	Valmiki Sabhagar
15 March 2023	2.30 p.m.	Purvottari (North-Eastern and Western Writers' Meet)	Valmiki Sabhagar
15 March 2023	5.00 p.m.	Kathasandhi with Abdus Samad, Eminent Urdu Fiction Writer	Valmiki Sabhagar
15 March 2023	10.00 a.m.	LGBTQ Writers' Meet (Contd...)	Vyas Sabhagar
15 March 2023	2.30 p.m.	Panel Discussion on Publishing in Digital World	Vyas Sabhagar
15 March 2023	11.00 a.m.	Panel Discussion on Cinema and Literature	Tiruvalluvar Sabhagar
15 March 2023	2.30 p.m.	Panel Discussion on Epics of Tribal Communities in India	Tiruvalluvar Sabhagar
15 March 2023	10.00 a.m.	National Seminar on Memories of Epics, Indian Independence Movement & Nation Building (Contd...)	Sahitya Akademi Auditorium, 1st Floor
15 March 2023	5.00 p.m.	Indo-Kazakh Writers' Meet	Sahitya Akademi Conference Hall, 3rd Floor
15 March 2023	6.00 p.m.	Cultural Event : Sahitya Evam Abhinaya : Text to Performance by Jayant Kastuar	Tiruvalluvar Sabhagar
16 March 2023 Theatre - 1	10.00 a.m.	Spin-a-Tale (Programme for Children)	Meghdoot Open Air
16 March 2023	11.00 a.m.	Panel Discussion on Indian Literature Abroad	Valmiki Sabhagar
16 March 2023	2.30 p.m.	Panel Discussion on Literature and Women Empowerment	Valmiki Sabhagar
16 March 2023	11.00 a.m.	Panel Discussion on Importance of Mother Tongues	Vyas Sabhagar
16 March 2023	2.30 p.m.	Panel Discussion on Sanskrit Language and Indian Culture	Vyas Sabhagar
16 March 2023	10.30 a.m.	Purvottari (North-Eastern and Eastern Writers' Meet)	Tiruvalluvar Sabhagar
16 March 2023	2.30 p.m.	People and Books with Kailash Satyarthi, Renowned Social Reformer & Nobel Laureate	Tiruvalluvar Sabhagar
16 March 2023	10.00 a.m.	National Seminar on Memories of Epics, Indian Independence Movement & Nation Building (Contd...)	Sahitya Akademi Auditorium, 1st Floor

**Schedule of events is subject to change.*

Media Partner
National · आकाशवाणी · FM BOLE TOH 91.1 FM Radio City A JAGRAN INITIATIVE
for further details visit :
https://sahitya-akademi.gov.in

Book Exhibition
10:00 am to 7:00 pm (Daily)
Buy Books Online
Link:
http://sahitya-akademi.org.in/

SAHITYA AKADEMI
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001
Telephone: 91-11-23386626/27/28
E-mail: secretary@sahitya-akademi.gov.in